इकाई 3 : भाषा और सामाजिक अंतःक्रिया

इकाई की रूपरेखा

3.0 प्रस्तावना

3.1 उद्देष्य

3.2 भाषा और समाज

3.3 द्विभाषिकता/बहुभाषिकता

3.3.1 द्विभाषी बनना

3.3.2 द्विभाषी होना

3.3.3 एक व्यक्ति के लिए द्विभाषी होने के परिणाम

3.4 भाषा और शक्ति (क्षमता)

3.4.1 समाज में भाषा और शक्ति

3.5 सारांष

3.6 बोध प्रष्नों के उत्तर

3.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

3.0 प्रस्तावना

हम सभी प्रतिदिन भाषा का प्रयोग करते हैं। परंतु हममें से कितने लोग ऐसे हैं जो अपने जीवन में भाषा के महत्व या इसकी प्रासंगिकता के बारे में सोचते हैं? क्या भाषा केवल मानव समाज की संपति है? ऐसा क्या है जो हमें अन्य प्राणियों से अलग करता है? क्या हम सभी अपनी भाषा के प्रयोग में सृजनात्मक है? क्या हम भाषा का प्रयोग विभिन्न उद्देष्यों के लिए विविध तरीकों से करते हैं? ऐसे कुछ प्रष्नों का उत्तर देने का प्रयास हमने खंड 1 में किया है।

वस्तुतः भाषा एक बड़ा रहस्य है और शायद इसी वजह से हमें इसके बारे में गहराई से और सावधानीपूर्वक सोचने विचारने की जरूरत है। जब आप यह समझ जाएंगे कि भाषा का अध्ययन अलग से नहीं किया जा सकता तो इसकी रहस्यपूर्ण प्रकृति खुद व खुद आपको समझ में आने लगेगी। इसका प्रयोग समाज में किया जाता है और इसलिए हमें भाषा का अध्ययन समाज के संदर्भ में ही करना चाहिए। समाज के सदस्य जो बोलते हैं वही भाषा है। परंतु समाज क्या है? समाज ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो आम तौर पर किसी खास उद्देष्य या उद्देष्यों के लिए एक साथ जुड़े होते हैं। **उद्देष्य चाहे जो भी हो, निःसंदेह भाषा का प्रयोग, मनुष्य जाति का एक अभिन्न अंग है।** वस्तुतः, भाषा का सही या समुचित प्रयोग न करने से समाज में व्यक्ति की स्थिति प्रभावित हो सकती है और यहां तक कि इसका प्रभाव उसके व्यक्तित्व को भी बदल सकता है।

भाषा समाज के बाहर न तो विद्यमान रह सकती है और न ही विकसित हो सकती है। संगीत के लिए गीतों का जो महत्व है वही समाज के लिए भाषा का है। दोनों के बीच अंतःनिर्भरता का संबंध है। यदि हम समाज पर भाषा के प्रभाव और भाषा पर समाज के प्रभाव की बात नहीं करते तो इन दोनों के बीच के संबंध की आधी अधूरी तस्वीर ही हमारे सामने आएगी। **भाषा विज्ञान की एक अत्यंत महत्वपूर्ण शाखा समाज भाषा विज्ञान के भाषा वैज्ञानिकों का मुख्य सरोकार, भाषा और समाज के बीच के जटिल संबंधों की विवेचना करना है।**

समाज भाषा वैज्ञानिक जिन प्रष्नों के बारे में जांच पड़ताल करते हैं उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं :

1. भाषा स्थिर (स्थायी) है या परिवर्तनषील?
2. सामाजिक कारक भाषा परिवर्तन के लिए कहां तक उत्तरदायी हैं?
3. क्या मानक भाषाएं बोलियों से भिन्न हैं?
4. क्या वास्तव में सजातीय समाज होते हैं?

5. क्या भाषा का प्रयोग को एक शक्ति साधन के रूप में किया जा सकता है और इससे सामाजिक शोषण हो सकता है?

6. क्या भाषा सामाजिक परिवर्तन ला सकती है?

7. भाषाएं क्यों बदलती हैं?

8. क्या भाषा नियोजन अनिवार्य है?

हमने खंड 1 में इनमें से कुछ प्रष्नों के उत्तर दिए हैं।

इस इकाई में हम इनमें से अधिकांष प्रष्नों का उत्तर देने का प्रयास करेंगे। हम समाज भाषा विज्ञान में किए गए अनुसंधानों का उल्लेख एक संदर्भ बिन्दु (निर्देष चिन्ह) के रूप में करेंगे। 1960 के दषक से समाज भाषा वैज्ञानिकों की पर्याप्त संख्या में वृद्धि हुई और यह शैक्षिक अनुसंधान का एक स्वतंत्र क्षेत्र बन गया है।

3.1 उद्देष्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप सक्षम हो सकेंगे :

- भाषा और समाज के बीच संबंध का विष्लेषण करने में,
- द्विभाषिकता और इसके परिणामों को समझने में,
- भाषा और शक्ति के बीच के संबंध का आलोचनात्मक विष्लेषण करने में,

3.2 भाषा और समाज

समाज भाषा विज्ञान, भाषा वैज्ञानिकों और समाज वैज्ञानिकों का मिलन स्थल है। तथापि, अनेक बार भाषा और समाज के बीच संबंध पर विरोधी विचार व्यक्त किए जाते रहे हैं। कुछ लोगों ने तो सामाजिक यथार्थ को भाषा के संदर्भों में देखा है जबकि अन्य लोगों की यह धारणा है कि भाषा के रूपों और कार्यों को सामाजिक कारक निर्धारित करते हैं। पर कुछ भी

हो, ये विविध दृष्टिकोण जैसे भी हो, ये समाज और भाषा दोनों ही के स्वरूप पर विचार करने में हमारी मदद करते हैं और हमें इस बारे में सचेत करते हैं कि समाज और भाषा के बीच संबंध जटिल रूप से सम्मिश्रित है।

समाज भाषा वैज्ञानिक भाषा के परिवर्तनषील स्वरूप की समीक्षा करते हैं। **उनका यह मानना है कि भाषा स्थिर तत्व (वस्तु) नहीं है बल्कि यह गतिषील है और परिवर्तन के अधीन है अर्थात् परिवर्तित होती रहती है।** भाषा संबंधी परिवर्तनों की जांच पड़ताल किसी भी स्तर पर की जा सकती है जैसे–ध्वनिग्राम, रूपात्मक, वाक्यरचनात्मक, अर्थसंबंधी अथवा वार्तालाप संबंधी। परिवर्तन कई कारणों से हो सकते हैं जैसे कि भौगोलिक अलगाव, लिंग, आयु, षिक्षा, सामाजिक वर्ग, जाति इत्यादि अथवा शैली और सूचकों में अंतर के कारण। इसकी चर्चा हम खंड 1 में कर चुके हैं। भाषा में स्थिति के अथवा सामाजिक संदर्भ के अनुसार भी परिवर्तन हो सकता है।

समाज भाषा विज्ञान में **सामाजिक संदर्भ** को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। अमेरिका के सापेक्षिक रूप से सजातीय समाज का समाज भाषा वैज्ञानिक यथार्थ भारत की विजातीयता से काफी अलग है। यह तथ्य कि भारत में 1,652 भाषाएं बोली जाती है यह मानने का अपने आप में ही एक पर्याप्त कारण है कि यहां पर विविधता बड़ी मात्रा में व्याप्त है। परंतु इस विविधता और भाषायी परिवर्तन के बावजूद यहां पर एक प्रकार की आधारभूत एकता दिखाई देती है, जिसके कारण संप्रेषण बहुत आसानी से हो जाता है। भारत में किसी व्यक्ति के लिए अनेक (बहु) पहचाने बनाए रखना कोई असामान्य बात नहीं है। उदाहरणार्थ हो सकता है कि दिल्ली में कोई गुजराती बोलने वाला व्यक्ति घर पर अपने परिवार के सदस्यों के साथ गुजराती में बात करता हो, अपने दफ्तर में अंग्रेजी में, दोस्तों के साथ हिंदी में और किसी अन्य परिवेष में किसी और दूसरी भाषा में बात करता हो। यह याद रखना आवष्यक है कि प्रत्येक सामाजिक संदर्भ (परिवेष) की समीक्षा उसके अपने पूर्ण एवं वैयक्तिक अधिकार द्वारा की जानी चाहिए। इससे आपको यह भी पता चलता है कि भारत मुख्यतः एक बहुभाषी देष है। अगले भाग में हम द्विभाषिकता/बहुभाषिकता के बारे में चर्चा करेंगे।

बोधप्रष्न 1

टिप्पणी : (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाइ के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1) आप निम्नलिखित के साथ बात करते समय किन भाषाओं का प्रयोग करते हैं?

i) माता

ii) पिता

iii) दादी / दादा, नानी / नाना

iv) भाई, बहन (सहोदर)

v) सहपाठी

vi) षिक्षक

vii) दुकानदार

viii) अजनबी व्यक्ति

2) इसके बारे में विचार करिए और कारण बताइए कि आप भिन्न–भिन्न लोगों के साथ अलग–अलग भाषा का प्रयोग क्यों करते हैं?

3.3 द्विभाषिकता / बहुभाषिकता

भारत में आधारभूत द्विभाषिकता की दीर्घ परम्परा रही है। एक भारतीय के रूप में शायद आप सभी लोग इस तथ्य को बिना प्रमाण के मान लेते हैं, परंतु यदि आप यह समझ लें कि द्विभाषिकता क्या है, तो इससे आपको अपने समाज एवं अपने षिक्षार्थी दोनों को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलेगी। द्विभाषिकता का अर्थ है एक से अधिक भाषा के प्रयोग में निपुणता। कुछ समय पहले तक यह माना जाता था कि एकभाषिकता अथवा एक भाषा का

प्रयोग विष्व के अधिकांष भागों में (विषेष रूप से विकासषील देषों में) सामान्य नियम था और द्विभाषिकता एक प्रकार का पथांतरण अथवा असामान्य तथ्य था। तथापि, हाल ही में, अब धीरे–धीरे यह समझा जाने लगा है कि हम सभी लोग (तथाकथित एकभाषी लोगों सहित) अनिवार्य रूप से द्विभाषी है क्योंकि वहां भी जहां यह माना जा रहा हो कि कोई व्यक्ति केवल एक भाषा (जैसे अंग्रेजी) का प्रयोग कर रहा है वह उसी भाषा की अनेक शैलियों, सूचकों और बोलियों का प्रयोग और नियंत्रण कर रहा होता है। तथापि, सही शब्दों में, द्विभाषिकता शब्द का प्रयोग उन स्थितियों का उल्लेख करने के लिए किया जाता है जहां दो या अधिक भिन्न भाषाएं सम्मिलित हों। वस्तुतः कुछ लोग द्विभाषिकता शब्द का प्रयोग 'दो भाषा' वाली स्थिति के लिए करना पसंद करते हैं और जहां दो से अधिक भाषाएं शामिल हों उन स्थितियों के लिए वे बहुभाषिकता शब्द का प्रयोग करते हैं। **तथापि 'द्विभाषिकता' शब्द अब उन सभी स्थितियों का उल्लेख करने के लिए एक मानक व्याख्या शब्द के रूप में प्रयुक्त किया जाता है जहां दो या अधिक भाषाएं सम्मिलित हों।**

3.3.1 द्विभाषी बनना

द्विभाषिकता के बारे में होने वाली किसी भी चर्चा का एक महत्वपूर्ण आयाम है कोई दूसरी भाषा (भाषा–2) सीखने की प्रक्रिया। सीखने की इस प्रक्रिया को समझने के लिए हमें निम्नलिखित प्रष्नों के उत्तर ढूंढने होंगे :

क) भाषा–2 (द्वितीय भाषा) कब और किन परिस्थितियों में सीखी जाती है?

ख) भाषा–2 को सीखने के पीछे प्रेरणाएं क्या हैं?

ग) भाषा–2 का षिक्षार्थी जिस समाज का सदस्य है वह समाज उसे इसको सीखने के लिए किस प्रकार प्रोत्साहित करता है और उसकी किस प्रकार सहायता करता है?

प्रष्न (क) का उत्तर स्पष्ट तौर पर भाषा–2 के षिक्षार्थी की आयु से संबंधित होगा कि वह किस आयु में यह भाषा सीख रहा है और भाषा–2 में उसने किस प्रकार का औपचारिक या अनौपचारिक प्रषिक्षण प्राप्त किया। कोई व्यक्ति भाषा–2 सीखना बहुत कम उम्र पर शुरू कर सकता है, लगभग उतनी ही कम उम्र पर जितनी पर वह भाषा–1 सीखता है, या वह

भाषा–2 को बड़ी उम्र में भी सीख सकता है। उदाहरणार्थ, यदि हम अंग्रेजी का मामला लें तो देखेंगे कि बहुत से भारतीय बच्चे अपनी भाषा–1 के लगभग साथ ही साथ इसको भी सीखना शुरू कर देते हैं जबकि अन्य बहुत से बच्चे अंग्रेजी सीखना या तो पांच वर्ष या दस वर्ष की आयु से या फिर इसके भी बाद से सीखना शुरू करते हैं। यह इस पर निर्भर करता है कि वे किस प्रकार के स्कूलमें पढ़ने जाते हैं अथवा अन्य स्थितियों के कारण भी ऐसा होता है। कुछ बच्चे अंग्रेजी को औपचारिक या अनौपचारिक दोनों रूपों से सीखते हैं जबकि अन्य कुछ बच्चे इसको केवल औपचारिक रूप से कक्षा में सीखते हैं। भाषा–2 में किसी व्यक्ति के निपुण होने से इसके प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ते हैं। जो लोग कम आयु में भाषा–2 सीखते हैं और ऐसी स्थितियों में बड़े होते हैं जो उन्हें भाषा–2 के संबंध में पर्याप्त जानकारी उपलब्ध कराती हैं और उसको प्रबलित करती हैं। वे स्वाभाविक रूप से इसमें अधिक धाराप्रवाहिता (वाक्कटुता) और दक्षता प्राप्त कर लेते हैं उन्हें भाषा–2 को सीखना उन लोगों की अपेक्षा अधिक आसान लगता है जिनकी सीखने की प्रक्रिया बड़ी आयु में या अलग परिस्थितियों में प्रारंभ होती है। इस बात को और अधिक स्पष्ट करने के लिए हम दो बच्चों के बीच के अंतर का वर्णन करेंगे। एक बच्चा एक षिक्षित, सम्पन्न परिवार का है और महानगर में रहता है। वह अंग्रेजी माध्यम के पब्लिक स्कूल में पढ़ने जाता है और एक दूसरा बच्चा है जो किसी छोटे शहर या गांव में निम्न मध्यवर्ग के परिवार का है। वह सरकारी स्कूल में पढ़ने जाता है और कक्षा V में पहुंच कर ही अंग्रेजी पढ़ना आरंभ करता है और वह भी मात्र एक विषय के रूप में। निर्विवाद रूप से पहला बच्चा अंग्रेजी में निपुण होगा। इसके अलावा यह भी याद रखना जरूरी है कि व्यक्ति के जीवन के प्रारंभिक वर्ष भाषा–2 सीखने के लिए बेहतर होते हैं।

प्रष्न (ख) इससे संबंधित है कि कोई व्यक्ति भाषा–2 'क्यों' सीखता है। भाषा–1 को सीखना तो बड़े होने की प्रक्रिया और समुदाय में समाजीकरण का आवष्यक और अपरिहार्य (अनिवार्य) परिणाम है पर भाषा–2 विविध कारणों से सीखी जाती है। कोई व्यक्ति भाषा–2 या भाषा–3 के रूप में कोई शास्त्रीय भाषा सीख सकता है। वह यह भाषा इस उद्देष्य से सीखता है कि वह अपनी विरासत के संबंध में जानकारी प्राप्त कर सके। ऐसे मामलों में (उदाहरण के लिए, भारतीय संदर्भ में भाषा–3 के रूप में यदि कोई संस्कृत सीखे) यह उद्देष्य संस्कृत पाठ्य–पुस्तकों से परामर्ष तक सीमित होता है और यह संभावना रहती है कि व्यक्ति इसका

प्रयोग समुदाय के अन्य सदस्यों के साथ रोजमर्रा की बातचीत में शायद ही कभी करें। यह ज्ञान अर्जन का एक साधन ही रहेगा। संप्रेषण और अंतःक्रिया का माध्यम नहीं बनेगा। इसके अतिरिक्त, समुदाय में भाषा–2 के रूप में संस्कृत सीखने वाले लोगों की संख्या हमेशा सीमित ही रहेगी और संस्कृत में बोलने, सुनने के मौके भी बहुत ही कम मिलेंगे। इसकी तुलना ऐसे व्यक्ति से करिए जो भाषा–2 के रूप में कोई आधुनिक भारतीय भाषा सीखता है (उदाहरणार्थ, कोई तमिल भाषी मूल निवासी भाषा–2 के रूप में हिन्दी सीखे। यहां हिन्दी सीखने की उसकी प्रेरणा पूरी तरह अलग होगी। वह तमिल भाषी जो हिन्दी सीखता/सीखती है वह ऐसा केवल इसलिए नहीं करेगा/करेगी कि खुद को हिन्दी साहित्य और हिन्दी से संबंधित सांस्कृतिक गतिविधियों से अवगत करा सके बल्कि वह इससे भी प्रेरित होगा/होगी कि हिन्दी भाषी व्यक्तियों से वार्तालाप कर सके और अपने जीवन से संबंधित विभिन्न स्थितियों और विविध प्रकार के क्षेत्रों जैसे–समाजीकरण, रोजगार, जन–संचार, व्यापार आदि में हिन्दी का प्रयोग कर सके। इस प्रकार भाषा–2 के रूप में हिन्दी उसके शाब्दिक खजाने का एक स्पंदमान हिस्सा बन जाएगी और वह इसका मौखिक और लिखित दोनों रूपों में सक्रिय प्रयोग कर सकेगा/सकेगी। इसके अलावा कोई व्यक्ति जर्मन या फ्रेंच या स्पेनिष भाषा भी सीख सकता है (भारतीय संदर्भ में)। इनके सीखने के पीछे यह प्रेरणा निहित होगी कि वह फ्रेंच, जर्मन या स्पेनिष, संस्कृति और साहित्य की जानकारी प्राप्त कर सके और शायद वह उन देषों में पर्यटन या उच्च षिक्षा प्राप्त करने के उद्देष्य से जाना भी चाहता हो, जहां ये भाषाएं बोली जाती हैं।

इस प्रकार कोई व्यक्ति विभिन्न कारणों से और प्रेरणा की विभिन्न मात्रा के साथ दूसरी भाषा सीख सकता है। भाषा–2 सीखने के उद्देष्य बहुत सीमित से लेकर बहुत व्यापक हो सकते हैं। इन सभी बातों का भाषा–2 के सीखने की मात्रा और गुणवत्ता पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता हैं।

3.3.2 द्विभाषी होना

भाषा–2 से संबंधित षिक्षण, सहायता और प्रतिपुष्टि (फीडबैक) के प्रकार और गुणवत्ता के आधार पर विभिन्न लोग भाषा 2 में निपुणता के भिन्न–भिन्न स्तरों को प्राप्त करते हैं। यूनेस्को की एक रिपोर्ट (वर्ष 1978) में बताया गया है कि 'द्विभाषिकता कोई पूर्ण स्थिति नहीं

है, यह समस्त या कुछ भी तथ्य नहीं है, बल्कि एक संबद्ध स्थिति है'। यह द्विभाषिकता की स्थिति भाषा 2 की सतही जानकारी संचालनात्मक नियंत्रण में न्यूनतम परंतु पर्याप्त रूप से प्रकार्यात्मक निपुणता से हो सकती है। जिसे ब्लूमफील्ड ''देषी जैसी क्षमता कहते हैं''। द्विभाषिकता पर लिखे गए साहित्य में भाषा 2 में निपुणता के संबंध में त्रिविध भिन्नता पाई जाती है। यहां मिश्रित द्विभाषी (Compund bilinguals), समन्वयी द्विभाषी (Coordinate biliguals) और सहायक द्विभाषियों (Subordinate bilingnals) का वर्णन प्राप्त होता है। भाषा वैज्ञानिकों, मनोभाषा वैज्ञानिकों और अन्य विद्वानों द्वारा किए गए अनुसंधानों से ज्ञात होता है कि गौण (Subordinate) द्विभाषी वह व्यक्ति कहलाता है जिसको व्याकरण अनुवाद विधि द्वारा भाषा 2 पढ़ाई गई हो और जो भाषा 2 के ऊपर नियंत्रण पाने में नौसिखिया की अवस्था में है। वह एक सरल क्रियाविधि द्वारा भाषा का प्रयोग करता है जिसमें भाषा 1 के एकांष भाषा 2 के समान एकांषों (षब्द, वाक्य आदि) में अनुवादित किए जाते हैं। उदाहरण के लिए एक गौण हिन्दी अंग्रेजी द्विभाषी के लिए भाषा 1 अर्थात् हिन्दी का शब्द/घोड़ा/जिसका अर्थ 'हौर्स' है भाषा 2 (अंग्रेजी) में उसका समान अनुवाद/हौर्स/ है। इस तरीके से भाषा का प्रयोग करने वाले द्विभाषी को 'आरंभिक द्विभाषी' भी कहते हैं। जो बच्चे दूसरी भाषा सीखना आरंभ करते हैं वे अकसर इसी तरीके से काम करते हैं।

द्विभाषी निपुणता में अगली अवस्था वह है जब भाषा सीखने वाला कोई व्यक्ति समन्वयी द्विभाषी बन जाता है। यह बताया जाता है कि समन्वयी द्विभाषी दो अलग अर्थ संबंधी आधारों के साथ काम करता है एक भाषा 1 के लिए और दूसरा भाषा 2 के लिए। इस प्रकार एकांष से एकांष अनुवाद की सरल प्रक्रिया का प्रयोग करने की बजाय समन्वयी द्विभाषी दो अलग एकांषों (संदर्भों) के साथ काम करता प्रतीत होता है और इस प्रकार वह संबंधित दो भाषाओं में एक–दूसरे के अनुरूप संकेत (प्रतीक) उत्पन्न करता है। इस प्रकार हिन्दी–अंग्रेजी समन्वयी द्विभाषी के लिए दो संदर्भ दिखाई देते हैं, इनमें से एक हिन्दी भाषिक एकांष 'घोड़ा' कहलाता है और दूसरा अंग्रेजी एकांष 'होर्स' कहलाता है और यह कार्य अनुवाद की क्रियाविधि का आश्रय लिए बिना ही किया जाता है। किसी भाषा 2 को सीखने वाले माध्यमिक स्तर के अधिकांष षिक्षार्थी समन्वयी द्विभाषी कहलाए जा सकते हैं क्योंकि इस स्तर पर वे भाषा 2 में 'सोचना' शुरू कर चुके होते हैं और इस प्रकार उस अवस्था से आगे आ

चुके होते हैं जहां उन्हें भाषा 2 में एकांष (षब्द) वार समान अनुवाद ढूंढने पड़ते हों। इन्हें पहले अनुच्छेद में वर्णित आरंभिक द्विभाषी के विपरीत 'आंषिक द्विभाषी' कहा जा सकता है।

तीसरे प्रकार के द्विभाषियों को मिश्रित द्विभाषी कहा जाता है। कहा गया है कि यह द्विभाषी जुड़े हुए या एकल अर्थसंबंधी आधार, संदर्भों के एकल सैट (एकल यथार्थ, जैसा था) के साथ भाषा का प्रयोग करता है और दोनों भाषायी कोड भाषा 1 और भाषा 2 के ऊपर पूरा नियंत्रण रखता है। गौण या समन्वयी द्विभाषियों से विपरीत वह अपनी इच्छानुसार भाषा 1 या भाषा 2 के एकांषों को बोल सकता है बिना अनुवाद किए या बिना यह अनुभव करते हुए कि वह दो भिन्न वस्तुओं या संदर्भों का उल्लेख कर रहा है। भाषा 2 के अधिकांष उन्नत षिक्षार्थी मिश्रित द्विभाषी कहलाए जा सकते है अर्थात् जिनको 'दो भाषाओं में देषी जैसी निपुणता' प्राप्त हो गई है और वे दोनों का सहजतापूर्वक प्रयोग करते हैं। ऐसे द्विभाषियों का उल्लेख करने के लिए एक दूसरा शब्द भी प्रयुक्त किया जाता है, वह है 'पूर्ण द्विभाषी'। निम्नलिखित तालिका में इन शब्दों के विभिन्न सेटों के बीच समांतरवाद को साहित्य में दी गई जानकारी के अनुसार और अधिक स्पष्ट किया जा रहा है।

द्विभाषिकता

अवस्था I	**अवस्था II**	**अवस्था III**
आरंभिक	आंषिक	पूर्ण
आरंभ करने वाला (नौसिखियों)	आंषिक	उन्नत
गौण (Subordinate)	समन्वय	मिश्रित
अपर्याप्त	पर्याप्त	उभय भाषी

3.3.3 एक व्यक्ति के लिए द्विभाषी होने के परिणाम

जब कोई व्यक्ति द्विभाषी बन जाता है तो क्या होता है? पहले लोगों की यह धारणा था कि द्विभाषिकता सामान्य मानव स्थिति होने की बजाय एक प्रकार को सामान्य स्थिति से हटकर

थी। यह भी माना जाता था कि भाषा सीखने के क्रम में द्विभाषिकता एक बाधा थी। अब यह धारणा बदल गई है। यह स्वीकार कर लिया गया है कि द्विभाषिकता कोई बाधा या बोझ नहीं है बल्कि यह तो एक समर्थ बनाने और संवर्धन करने वाली प्रक्रिया है। केवल एक ही भाषा की बजाय दो या अधिक भाषाएं जानने से व्यक्ति का भाषायी खजाना ही समृद्ध नहीं होता बल्कि वह संप्रेषण और अंतःक्रिया करने में भी प्रतिभासम्पन्न हो जाता है। द्विभाषी व्यक्ति पूर्वाग्रहमुक्त (खुले दिमाग वाला) बन जाता है और विभिन्न सांस्कृतिक परम्पराओं, प्रथाओं और प्रयोगों के प्रति अधिक संग्रहणषील बन जाता है। द्विभाषिकता से व्यक्ति की जानकारी और ज्ञान का क्षेत्र भी बढ़ता है। इन सबसे बढ़कर महत्वपूर्ण परिणाम यह होता है कि व्यक्ति की संग्रहणषीलता, पहुंच और जागरूकता बढ़ाकर द्विभाषिकता उसको अधिक सहनषील और निष्पक्ष बना देती है। जहां तक द्विभाषिकता को बोझ समझे जाने का सवाल है, अध्ययनों से पता चलता है कि द्विभाषिकता सीखने की प्रक्रिया को बाधित करने की बजाय वस्तुतः सुगम बनाती है।

भाषा षिक्षकों के रूप में हमें अपनी कक्षा के द्विभाषी संसाधन का प्रयोग करना चाहिए और उनकी द्विभाषिकता का लाभ उठाना चाहिए।

बोधप्रष्न 2

टिप्पणी : (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाइ के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1. द्विभाषी किसे कहते हैं?

....

....

....

2. गौण, समन्वयी और मिश्रित द्विभाषियों के बीच अंतर बताइए।

....

....

....

3. द्विभाषिकता संवर्धित करने वाली प्रक्रिया है या निर्बल करने वाली? चर्चा कीजिए।

....

....

....

3.4 भाषा और शक्ति

भाषा प्रायः सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों में चाहे वह षिक्षा हो या धर्म, मीडिया हो या प्रषासन या कोई और, शक्ति के एक साधन के रूप में प्रयुक्त की जाती है। धनी और शक्तिषाली लोगों की भाषा को अन्य सभी प्रकार की भाषाओं की कीमत पर प्रायः एक 'मानक' प्रकार की भाषा के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। भले ही वे अन्य भाषाएं भाषिक रूप से किसी भी प्रकार से कमतर न हों। इसके अतिरिक्त ऐसा इसलिए भी किया जाता है क्योंकि मानक भाषा उच्च सामाजिक गतिषीलता के लिए अनिवार्य बन जाती है। बहुभाषिकता को कक्षा के संसाधन के रूप में प्रयुक्त करने की बजाय भाषा की विभिन्नता को टालने का प्रयत्न किया जाता है और कक्षा में अंतःक्रिया (बातचीत) का स्वरूप अधिकतर एकाष्य (एक ही भाषा) में रहता है। अब भारत में समाज भाषा वैज्ञानिक इस प्रकार के मुद्दों से बहुत अधिक चिंतित हो रहे हैं और वे हमारी समाज भाषा वैज्ञानिक वास्तविकता में विष्वास कायम रखते हुए सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए उत्सुक है।

मानक भाषा को षिक्षा का एकमात्र वैध (उचित) माध्यम रखे जाने का आग्रह करने का सर्वाधिक खतरनाक परिणाम यह है कि बच्चे भाषा की जिस बहुलता को स्कूललाते हैं उसको नकार दिया जाता है अथवा उसे महत्व नहीं दिया जाता। हालाँकि दुनिया भर में अधिकांष कक्षाएं बहुभाषी होती हैं। तथापि प्रत्येक कक्षा के बहुत थोड़े से बच्चे ही घर पर मानक भाषा बोल पाते हैं। सामान्य तौर पर ऐसे बच्चे जो मानक भाषा बोलते हैं षिक्षा का पूरा लाभ उठा

लेते हैं। कक्षा में होने वाली गतिविधियों में केवल ऐसे बच्चे ही षिक्षण प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं जो मानक भाषा बोलते हैं जबकि वे बहुसंख्यक बच्चे जो अन्य भाषाभाषी है चुपचाप बैठे देखते रहते हैं। अतः इसमें कोई आष्चर्य की बात नहीं है कि ऐसे अधिकांष बच्चों को विद्यालय का वातावरण उबाऊ और भयपूर्ण लगता है। कक्षा और परीक्षा प्रणाली में प्रयुक्त की जाने वाली वार्तालाप कार्यनीतियां अधिकांष बच्चों के लिए असुरक्षा और चिंता उत्पन्न करती है, क्योंकि वे मानक भाषा के निकट होती हैं। इससे समाज की शक्ति संरचनाएं तो प्रबलित हो जाती हैं परंतु बच्चों की सृजनात्मकता उनकी मूल भाषा और विद्यालय की भाषा दोनों में ही निष्क्रिय पड़ जाती है।

वस्तुतः यह बड़ी विडंबना है कि यद्यपि अधिकांष कक्षाएं बहुभाषी होती हैं, परंतु हमारे षिक्षक प्रषिक्षण कार्यक्रम, षिक्षण विधियां और सामग्री इस तरह से डिजाइन की जाती है मानो वे पूरी तरह से एकभाषीय हों। ऐसी कक्षा कार्यनीतियां हमें शायद ही देखने को मिलें जिनमें बच्चों को भाषा, गणित, विज्ञान या पर्यावरण जागरूकता पढ़ाने के लिए विभिन्न भाषाओं का और विद्यमान ज्ञान संरचनाओं का प्रयोग किया जाता हो। कोई बच्चा जिस भाषा को पहले से ही जानता हो उस भाषा को नकारने का सुनिष्चित रूप से सही प्रभाव होता है कि उस बच्चे ने अपने अभी तक के जीवन काल में दुनिया के बारे में जो ज्ञान प्राप्त किया है उसको और उसके व्यापक संकल्पनात्मक संगठन को नकार दिया गया है। हमारे एक भाषीय स्कूलबच्चों में विरासत में प्राप्त भाषाओं के बारे में एक नकारात्मक और रूढ़िबद्ध धारणा पोषित करते हैं। भारत में धनी माता पिता के वे बच्चे जो प्रतिष्ठापूर्ण पब्लिक विद्यालयों में पढ़ने जाते हैं अक्सर अंग्रेजी को आसान, बढ़िया, काव्यात्मक, व्याकरणयुक्त, साहित्यिक समझते हैं परंतु वे अपनी खुद की भाषा (मातृभाषा) जैसे हिन्दी, पंजाबी आदि को उबाऊ, खराब, सीखने में कठिन, अपर्याप्त मानते है। आपको विषिष्ट पब्लिक विद्यालयों में पढ़ने वाले ऐसे बहुत से बच्चे मिलेंगे जो बहुत गर्व के साथ बताते हैं कि वे अपनी खुद की भाषा को पढ़ या समझ नहीं सकते। गरीब बच्चे निःसंदेह दोहरी मार से पीड़ित होते हैं—वे अंग्रेजी पढ़ पाने से तो वंचित रखे ही जाते हैं और अपनी खुद की भाषा पढ़ने के लिए राज्य द्वारा चलाए जाने वाले विद्यालयों में उन्हें अत्यधिक क्षीण अर्थात् कम अवसर मिलते हैं। पर्याप्त अवसरों और सुविधाओं के न मिल पाने के बावजूद जो बच्चे अपनी मातृभाषा के वाक्पटुता और उच्च कौषल अर्जित करने में सफल हो जाते हैं वे उपहास का पात्र बनते हैं और उन्हें ठुकरा दिया

जाता है क्योंकि हिन्दी, पंजाबी आदि भाषा अंग्रेजी की तरह शक्ति का एक संभावी साधन नहीं हैं।

बोधप्रष्न

1. कक्षा की कार्यविधि को देखें और दिए गए प्रष्नों का उत्तर देने का प्रयास करें :

i) क्या पढ़ाया जाना चाहिए इस बात का निर्णय कौन लेता है? क्या विद्यार्थियों की आवष्यकतानुसार विषय बदला जाता है?

....

....

....

ii) क्या विद्यार्थी पठन–पाठन की प्रक्रिया में भाग लेते हैं? वास्तव में वे कक्षा में क्या करते हैं?

....

....

....

iii) पाठ्यपुस्तक की भाषा क्या है?

....

....

....

iv) षिक्षा का माध्यम क्या है?

....

....

....

v) प्रष्नों का उत्तर विद्यार्थी किस भाषा में देते हैं?

....

....

....

vi) षिक्षक की प्रतिक्रिया किस प्रकार की होनी है?

....

....

....

2) दस लोगों से पूछिए कि अंग्रेजी, हिन्दी, पंजाबी और तमिल भाषा वे की निम्न लिखित विषेषताओं के बारे में क्या सोचते हैं?

काव्यात्मक, समृद्ध, साहित्य, साहित्यिक, व्याकरणयुक्त, सीखने में सरल, गौरवपूर्ण

3.4.1 समाज में भाषा और शक्ति

किसी समाज में भाषा और शक्ति के बीच अनैतिक संबंध सूक्ष्म और जटिल होता है। कभी–कभी इससे पीड़ित व्यक्ति यह जान भी नहीं पाता कि भाषा का प्रयोग उसको शोषित करने के साधन के रूप में किया जा रहा है। कभी–कभी, वे लोग भी जो कि शक्ति को नियंत्रित करते हैं यह नहीं जानते कि भाषा उनका प्राधिकार स्थायी बनाए रखने में योगदान दे रही है। आपने अक्सर पब्लिक स्कूलमें पढ़ने जाने वाले किषोरों को यह कहते सुना होगा 'यह मेरी गलती नहीं है कि मुझे अंग्रेजी माध्यम के स्कूलमें पढ़ने भेजा गया। अब मैं हिन्दी क्यों सीखूं? मैंने अच्छी नौकरी पाने के लिए कड़ा परिश्रम किया है। गरीब बच्चे भी अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में पढ़ने क्यों नहीं जाते और कड़ी मेहनत क्यों नहीं करते? आदि। इस भाग में हम अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए सामाजिक अंतःक्रिया के विभिन्न क्षेत्रों से उदाहरण लेंगे।

आइए सबसे पहले लिंग भेदभाव के मामले पर विचार–विमर्ष करें। महिलाओं के साथ उनके जन्म से ही भेदभावपूर्ण व्यवहार किया जाता है, चाहे वह षिक्षा का क्षेत्र हो या, रोजगार, संपत्ति की भागीदारी, गंभीर पारिवारिक निर्णय या कुछ और। दिलचस्प बात यह है कि यह है कि यह भेदभाव भाषा और भाषायी व्यवहार में भी जारी रखा जाता है और कोडित किया जाता है। विष्व की अधिकांष भाषाओं में 'वह (पुरूषवाची शब्द)' मानवता, विद्यार्थी, षिक्षक लेखक इत्यादि का वहां भी प्रतिनिधि है, जहां इनसे संबंधित कामों में संलग्न व्यक्ति अधिकतर महिलाएं हैं। इसके अलावा 'मिस्टर' शब्द अधिकांष भाषाओं में हमेषा पुरूष के लिए प्रयुक्त किया जाता है भले ही वह विवाहित हो या अविवाहित परंतु स्त्री के संदर्भ में उसकी वैवाहिक स्थिति को स्पष्ट करना आवष्यक है और उसके लिए मिस, मिसिज, कुमारी, श्रीमती आदि शब्द प्रयुक्त किए जाते हैं, यद्यपि एक शब्द एमएस (सुश्री) आजकल काफी प्रचलन में है।

इसके पष्चात् विज्ञापनों के बारे में चर्चा करें। यहां पर आकर भाषा, लिंग, शक्ति और बाजार अर्थव्यवस्था की शक्तियां सम्मिलित हो जाती हैं। आप जिस भी उत्पाद को बेचना चाहते हों जैसे–टूथपेस्ट, साबुन, कार, टायर, प्रसाधन सामग्री, स्कूटर, घरेलू उपकरण बिजली के स्विच आदि कुछ भी–निरपवाद रूप से विज्ञापन का सर्वप्रमुख हिस्सा होगी 'एक खुबसूरत' महिला की तस्वीर जो कम कपड़े पहने होगी और उस विज्ञापन में स्त्री के शरीर के अंगों का उस उत्पाद की किसी न किसी विषेषता के साथ सह–संबंध दर्षाया जाएगा जो अनिवार्य रूप से भाषायी होगा। यदि यह उत्पाद कोई प्रसाधन सामग्री या सैनेटरी पैड है तो ऐसा दिखाना उचित है। परंतु जब बिजली के स्विचों जैसी वस्तुओं के विज्ञापन में स्त्री के शरीर के अंगों को स्विचों के समान बनाने का अत्यंत बुरा प्रयास किया जाता है तो आष्चर्य होने लगता है कि ये हो क्या रहा है। हम देखते है कि हमारे समाज में महिलाओं को वस्तुओं के समान समझा जाता है और इस छवि को प्रबलित करने में भाषा निरंतर सहायता करती है। आपने यह भी ध्यान दिया होगा कि ये प्रयास उन भाषाओं में अधिक प्रभावषाली ढंग से किए जाते हैं जिनका शक्ति सूचकांक बहुत ऊपर है। जेन्डर और वार्ता (टॉक) संबंधी अनुभवजन्य अध्ययनों में वार्तालाप शैली की कई विषिष्ट विषेषताओं के बारे में लिखा गया है जो महिला और पुरूष वक्ताओं के बीच अंतर बताती है और उस शक्ति की ओर इंगित करती है जिसके

लिए कहा जाता है कि समाज में पुरूष अपने पास रखते हैं। इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :

वार्त्ता की मात्रा : यह देखा जाता है कि पुरूष वक्ता महिला वक्ताओं की अपेक्षा ज्यादा बोलते है, खास तौर से औपचारिक या सार्वजनिक संदर्भों में।

बीच में टोकाटाकी : पुरूष वक्ता महिला वक्ताओं के बोलते समय अधिक टोकाटाकी करते हैं जबकि महिलाएं उनके बोलते समय कम टोकाटाकी करती हैं।

वार्तालाप संबंधी सहायता : महिला वक्ता अन्य वक्ताओं को सहायता और प्रोत्साहन देने वाले शब्दों का बार–बार प्रयोग अधिक करती है उदाहरणार्थ 'न्यूनतम प्रत्युत्तर' जैसे–हूं और हां।

टोकाटाकी के नमूनों के एक अध्ययन में ज़िम्मरमेन और वैस्ट (1975) ने पता लगाया कि टोकाटाकी के अधिक मामले एकल–लिंग वार्ताओं की बजाय मिश्रित एकल–लिंग वार्ताओं में अधिक घटित हुए और वास्तव में सभी मिश्रित–लिंग टोकाटाकी के मामले पुरूषों द्वारा उकसाए गए थे। इन शोधकर्ताओं के विचार से वार्ता के बीच में टोकाटाकी करके बाधा पहुंचाना वक्ता के इस अधिकार का उल्लंघन करना है कि वह अपनी वार्ता को पूरा कर सके। उनका तर्क था कि महिलाओं की वार्ताओं के दौरान पुरूषों द्वारा टोकाटाकी करने का तात्पर्य है कि वार्ता भागीदारों के रूप में वे महिलाओं की समान स्थिति को नकार रहे हैं। ज़िम्मरमेन और वैस्ट का शोध कार्य महिलाओं और पुरूषों की भाषा पर प्रभुत्व की स्थिति से संबंधित रहा है। उन्होंने स्थानीय अंतःक्रियात्मक व्यवहार को शक्ति की काफी अधिक मात्रा से संबद्ध किया जो सामान्यतः अधिकतर पुरूषों को प्राप्त है, उनका कहना है कि 'ऐसे निष्चित और नमूनाबद्ध तरीके प्रचलित है जिनमें पुरूषों द्वारा अन्य संदर्भों में उपभोग की जाने वाली शक्ति और प्रभुत्व, महिलाओं के साथ वार्तासंबंधी अंतःक्रियाओं में भी प्रयुक्त किए जाते हैं' (मेसथे इत्यादि 2000)।

इसके बाद अब हम समाचार पत्रों के मामले पर विचार करेंगे। साधारण लोग विषयनिष्ठ और तर्कपूर्ण रिपोर्टिंग प्राप्त करने के लिए समाचारपत्र पढ़ते हैं और किसी विषेष घटना के बारे में जानकारी प्राप्त करने के संबंध में वे समाचारपत्र में पढ़ी गई बातों पर अपनी धारणा बनाते हैं। वे इस बारे में शायद ही जानते हैं कि समाचारपत्रों की एक महत्वपूर्ण स्थिति ऐसी भी है

जहां प्रतिदिन भाषा और शक्ति के बीच अनैतिक गठजोड़ स्थापित किया जाता है। समाचारपत्र के मुख्य समाचार (षीर्षक) आम तौर पर उनके पूर्वग्रह के सुस्पष्ट सूचक होते हैं, और प्रायः यह स्पष्ट रूप से समझ में आ जाता है कि इस समाचारपत्र को पैसा कौन दे रहा है और कौन से राजनीतिक दल का यह समाचारपत्र समर्थन करता है। इन शीर्षकों से यह भी समझ में आ जाता है कि इन समाचारपत्रों का मुख्य उद्देष्य वस्तुनिष्ठ रिपोर्ट प्रस्तुत करना और सामाजिक परिवर्तन लाना नहीं बल्कि अपनी बिक्री में बढ़ोतरी करना और सामाजिक गतिहीनता (रूढ़ता) लाना है। समाचारपत्रों की सुर्खियों में आपको हमेशा सनसनी परम्परा की कुछ मात्रा अवष्य मिलेगी।

बोधप्रष्न 4

1) अपनी कक्षा के विद्यार्थियों को ध्यानपूर्वक देखिए और निम्नलिखित पर अपने विचार प्रकट करें:

- क्या लड़कियों की अपेक्षा लड़के ज्यादा बात करते हैं?
- क्या लड़के बीच में अधिक टोकाटाकी करते हैं?
- क्या वे अधिक अषिष्ट भाषा बोलते हैं?

2) किसी पत्रिका में विज्ञापनों को देखिए। ऐसे विज्ञापनों के बारे में संक्षिप्त विवरण लिखिए जिनमें महिला को दिखाया गया है हालांकि वहां इसकी कोई जरूरत नहीं थी।

....

....

....

3.5 सारांष

इस इकाई में हमने आपको भाषा और समाज के बीच के घनिष्ठ संबंध की जानकारी दी है। खंड 1 में हम पहले ही भाषा में पाई जाने वाले विभिन्नताओं की चर्चा कर चुके हैं। इस इकाई में हमने द्विभाषिकता और बहुभाषिकता तथा भाषा एवं शक्ति पर गहन विचार किया है। षिक्षकों के रूप में हमें इन दोनों ही आयामों को समझने की जरूरत है क्योंकि हम अक्सर, शायद अनजाने में ही बच्चों की मातृभाषाओं को नकारते हैं और उन्हें निम्न स्तर का मानते हैं। हमें द्विभाषिकता का स्वागत करना चाहिए और कक्षा के बहुभाषी संसाधन को प्रयोग में लाने का प्रयास करना चाहिए।

3.6 बोध प्रष्नों के उत्तर

बोधप्रष्न 2

1) वह व्यक्ति द्विभाषी कहलाता है जो दो या अधिक भाषाओं का थोड़ी बहुत धाराप्रवाहिता (वाक्पटुता) के साथ प्रयोग करने की योग्यता रखता है।

2) गौण द्विभाषी वह व्यक्ति है जो भाषा 2 के ऊपर अपने नियंत्रण में आरंभ करने वाले (नौसिखिया) की अवस्था में होता/होती है। वह इस भाषा का प्रयोग एक साधारण क्रियाविधि से करता/करती है जिसमें भाषा 1 के एकांषों को भाषा 2 के समान एकांषों में अनूदित किया जाता है। समन्वयी द्विभाषी दो अलग अर्थपूर्ण आधारों.......... एक भाषा 1 के लिए और दूसरा भाषा 2 के लिए ....के साथ भाषा का प्रयोग करता है। इस प्रकार एकांष से एकांष के अनुवाद की सरल प्रक्रिया का प्रयोग करने की बजाय, समन्वयी द्विभाषी दो अलग एकांषों (संदर्भों) से भाषा प्रयोग करता प्रतीत होता है और संबंधित दो भाषाओं में एक–दूसरे के अनुरूप भाषायी संकेत प्रस्तुत करता हैं

   द्विभाषिकता की मिश्रित शैली में दो भाषाओं का बिल्कुल एक जैसा संदर्भ होता है। इसका अर्थ है कि दोनों का प्रयोग सहवर्ती रूप से किया जाता है। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति जो स्पेनिष और स्वीडिष भाषाओं का अध्ययन करता है वह बुक शब्द को जानता है। यह व्यक्ति स्पेनिष के शब्द (लिब्रो) और स्वीडिष शब्द (बोक) दोनों के

लिए एक सामान्य अर्थ जानता है जिससे वह इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि दोनों शब्द 'एक ही मानसिक प्रस्तुति से बंधे है' (रोमेन, 1955—79)।

3) अपने निजी विचार लिखिए।

3.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

सिम्पसन. पी और मेयर ए. (2009) लैंग्वेज एंड पावर : रिसोर्स बुक फॉर स्टूडेंट्स। रुटलेज

मेस्थ्रे, राजेन्द इत्यादि (2000) इन्ट्रोड्यूसिंग सोषियोलिंग्विस्टिक्स (द्वितीय संस्करण) एडिनबरा, एडिनबरा यूनीवर्सिटी प्रेस।

खंड परिचय

पिछले खंड में आपने भाषा और समाज के बीच संबंध के बारे में पढ़ा। भाषा और समाज दोनों ही परिवर्तनषील हैं। इस इकाई में हम भाषा और समाज के बीच अंतःसंबंध के अन्य आयामों के बारे में चर्चा करेंगे।

इकाई 3 (भाषा और सामाजिक अंतःक्रिया) का प्रारंभ हमने भाषा विज्ञान के उस विषिष्ट क्षेत्र के संक्षिप्त परिचय से किया है जो समाज और भाषा अर्थात् समाज भाषा विज्ञान के बीच घनिष्ठ संबंध पर प्रकाष डालता है। हमने कुछ ऐसे मुद्दों का विषेष उल्लेख किया है जिन पर भाषा वैज्ञानिक काम करते हैं। उदाहरणार्थ, भारत का आधारभूत ढांचा द्विभाषिकता पर आधारित है और द्विभाषिकता के स्वरूप के बारे में हमने आपको जानकारी दी है ताकि भारत के यथार्थ को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त षिक्षण कार्यनीतियां प्रयोग में लाई जा सके। भारत के बहुभाषीय परिदृष्य में हमने अंग्रेजी की स्थिति का वर्णन किया है और साथ ही यह भी बताया है कि समाज में एक विषिष्ट मजबूत ढांचा (शक्ति संरचना) बनाए रखने के लिए भाषाओं का, खास तौर से अंग्रेजी भाषा का किस प्रकार प्रयोग किया जा सकता है। शक्ति संरचना अक्सर उन पाठ्यपुस्तकों में से मौजूद रहती है जिन्हें विद्यार्थी पढ़ते हैं और बाहरी दुनिया में उन विज्ञापनों में देखने को मिलती है, जिनसे रोजमर्रा की जिन्दगी में उनका सामना होता रहता है।

इकाई 4 (भाषा, मन और मस्तिष्क) में हमने यह पता लगाने का प्रयास किया है कि भाषाओं का निरूपण मस्तिष्क में कहां और कैसे होना हैं, बच्चे किस प्रकार भाषा अर्जित करते हैं, विविध प्रकार की भाषा संबंधी विसंगतियां क्या हैं और वे किन कारणों से होती हैं। षिक्षक के रूप में आपके सामने कुछ ऐसे बच्चे आएंगे जिनमें ऐसी छोटी मोटी अक्षमताएं होगी। इस इकाई से आपको यह जानने में मदद मिलेगी कि ऐसे कौन से शारीरिक कारण हैं जिनसे ऐसी अक्षमताएं आती हैं।

इकाई 5 (भाषा अर्जन के सिद्धांत) में हमने भाषा किस प्रकार अर्जित की जाती है इससे संबंधित सिद्धांतों की चर्चा की है। हमने मुख्य रूप से व्यवहारवादी सिद्धांत चाम्सकी को भाषा अर्जन युक्ति सिद्धांत, पियाजे के विकास की अवस्थाओं, व्यगोत्स्की के समीपस्थ विकास क्षेत्र (जोन) और कृषेन के मॉनीटर मॉडल पर विषेष ध्यान केन्द्रित किया है। इन सिद्धांतों से यह

समझने का प्रयास किया है कि बच्चे किस प्रकार सीखते हैं और विषेष रूप से यह कि वे भाषाएं किस प्रकार सीखते हैं।

हम आषा करते हैं कि अपने षिक्षार्थियों को बेहतर रूप से समझाने में ये इकाइयां उपयोगी सिद्ध होगी।